I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

सतत विकास में ग्राम पंचायत की भूमिका का अध्ययन: विशेषकर रालामंडल पंचायत के संदर्भ में

डॉ. शैलबाला गांधी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, कस्तूरबा ग्राम रुरल इंस्टिट्यूट, कस्तूरबाग्राम ग्राम इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. शैलबाला गांधी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21933221

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य रालामंडल ग्राम पंचायत में सतत विकास के क्षेत्र में ग्राम पंचायत की भूमिका का मूल्यांकन करना है। अध्ययन में शिक्षा, स्वास्थ्य, जल आपूर्ति, सड़क निर्माण, स्वच्छता, कृषि विकास एवं स्थानीय समितियों की भूमिका का विश्लेषण किया गया। अध्ययन हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि ग्राम पंचायत द्वारा संचालित विकास कार्यक्रमों के कारण ग्रामीण क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं एवं जनभागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अध्ययन यह सिद्ध करता है कि सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में ग्राम पंचायतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 03-06-2026
- **Accepted:** 16-07-2026
- **Published:** 14-08-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 744-747
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

गांधी शै. सतत विकास में ग्राम पंचायत की भूमिका का अध्ययन: विशेषकर रालामंडल पंचायत के संदर्भ में. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):744-747.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: सतत विकास, ग्राम पंचायत, ग्रामीण विकास, जनभागीदारी, स्थानीय स्वशासन, रालामंडल पंचायत।

© 2026 डॉ. शैलबाला गांधी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

शोधकर्ता द्वारा परियोजना कार्य हेतु सतत विकास कार्य में ग्राम पंचायत की भूमिका विशेष कर ग्राम रालामंडल पंचायत के संदर्भ में सतत विकास एक दूरदर्शी योजना है जो आर्थिक विकास सामाजिक न्याय संगत और पर्यावरण संरक्षण के समावेश का विकास का आहान करती है तथा जो विकास के लिए भविष्य की वीडियो आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने पर जोर देती है इसके केंद्र में न्याय संगत व समावेशी समाज व लोग है।
सतत विकास पंचायती स्तरों के विकास कार्य ग्रामीण अंचलों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है तथा पंचायत के माध्यम से इन विकास कार्यों को पूरा किया जाता है जिससे ग्रामीण क्षेत्र वहां ग्राम विकास कार्य के माध्यम से सड़क पर जल सार्वजनिक शौचालय जल निकासी तालाब वह हाट बाजार विकास अधिकारियों में गति आती है।

2. विषय चयन का कारण

वर्तमान समय में सतत विकास के प्रमुख कार्यक्रम जैसे स्वस्थ भारत मेंक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया आदि सतत विकास के लक्षण के मूल कार्य है इनमें राज्य सरकार और स्थानीय सरकार इनमें से अनेक कार्यक्रम में मुख्य भूमिका क्या निभाती है इनका अध्ययन करना।
सतत विकास में स्थानीय सरकारों की भूमिका भी उतनी महत्वपूर्ण है सतत विकास के लक्षण का सीधा संबंध देश के स्थानीय सरकारों की गतिविधियों से है राज्य सरकार सतत विकास लक्षण पर अमल और उनकी निगरानी के लिए संकल्प अपना बजट निर्धारण और विकास में गहरी रुचि ले रही है इस कारण में इस विषय का चयन किया है।
ग्राम पंचायत लाल मंडल में सतत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा स्वास्थ्य जल पूर्ति आत्मनिर्भरता सुशासन सुरक्षित गांव बनाने के लिए जो परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं इस कारण में इस विषय का चयन किया।

3. परियोजना चयन के उद्देश्य

प्रस्तुत परियोजना कार्य में यहां देखना चाहती हूं-

1. सतत विकास में ग्राम पंचायत के द्वारा किए गए विकास कार्यों से क्या परिवर्तन हुए हैं इनका अध्ययन करना।
2. सतत विकास से ग्राम पंचायत रालामंडल के प्रति स्थानीय लोगों की जन भागीदारी का अध्ययन करना।
3. सतत विकास में किए गए कार्यों के प्रति आम लोगों स्थानीय लोगों का दृष्टिकोण एवं रुचि का अध्ययन करना।
4. सतत विकास द्वारा किए गए ग्राम पंचायत आल्हा मंडल में कार्यों जैसे की सड़क निर्माण जल स्वास्थ्य शिक्षा अधिकार अध्ययन करना

4. निदर्शन चयन की विधि

निर्देशन विधि के अंतर्गत समग्र में से किसी आधार पर कुछ प्रतिनिधि इकाइयां चुन ली जाती है और उन चुनी हुई इकाइयों के अध्ययन से निष्कर्ष निकाले जाते है। अर्थात जिसके अंतर्गत संबंधित समग्र की प्रत्येक इकाई का अध्ययन न करके केवल प्रतिदर्श में चयनित चयनित इकाइयों का ही अध्ययन करके समग्र के बारे में अनुमान लगाया जाता है। उसे निर्देशन विधि कहते हैं।

5. आंकड़े एकत्रित करने की विधि

- साक्षात्कार अनुसूची
- अवलोकन

6. उपकरण

प्रस्तुत शोध में अध्ययन करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। निर्देशन विधि का उपयोग करके साक्षात्कार अनुसूची विधि का निर्माण आंकड़े एकत्रित करने के लिए किया गया।

7. विश्लेषण

तथ्यों का विश्लेषण

तथ्यों का एकत्रीकरण करने के पश्चात अगली क्रिया तथ्यों के विश्लेषण की है, प्रस्तुत परियोजना कार्य में तथ्यों के लिए वर्गीकरण तथा तालिका की प्रक्रिया को अपनाया गया है। प्रोफेसर कर्लिंगर के अनुसार
विश्लेषण का अर्थ अनुसंधान के प्रश्नों का उनकी श्रेणी या को क्रमबद्ध व विशेषताओं के आधार पर उत्तर प्रदान करना है।

8. तालिक क्रमांक

तालिका 1: मूलभूत सुविधाओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, जल) में परिवर्तन दर्शाने वाली तालिका

सुविधाओं में परिवर्तन	संख्या	प्रतिशत
शिक्षा सुविधा में परिवर्तन	28	93%
स्वास्थ्य सुविधा में परिवर्तन	26	86%
अन्य सुविधा में परिवर्तन	24	80%

उपयुक्त तालिका द्वारा यह स्पष्ट है कि (शिक्षा 93%,) (स्वास्थ्य सुविधा 86%) (स्वच्छ जल 80%) है

तालिक 2: सतत विकास निर्माण कार्यो को दर्शाने वाली तालिका

निर्माण कार्य	संख्या	प्रतिशत
सड़क निर्माण	29	96%
नालियों का निर्माण	22	73%
स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन निर्माण कार्य	28	93%
संपर्क मार्ग निर्माण कार्य	26	86%

© 2026 डॉ. शैलबाला गांधी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उपयुक्त तालिका द्वारा यह स्पष्ट है कि, (सड़क निर्माण 96%) (नालियों का निर्माण 73%) (स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन निर्माण कार्य 93%) (संपर्क मार्ग निर्माण 86%) है।

तालिक3: सतत विकास द्वारा कृषि क्षेत्र में परिवर्तन दर्शाने वाली तालिका

कृषि क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत
सिंचाई	19	63%
उन्नत बीज	24	80%
उर्वरक	22	73%

प्रयुक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कृषि क्षेत्र में (सिंचाई 63%) (उन्नत बीज 80%) (उर्वरक 63%) प्रतिशत है।

तालिक 4: सतत विकास योजना द्वारा बनाई गई ग्राम पंचायत में निम्न समितियो दर्शाने वाली तालिका

समितियाँ	संख्या	प्रतिशत
स्थानीय समितियाँ	28	93%
ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति	26	86%
स्व-सहायता समूह समिति	30	100%

उपरोक्त तालिका द्वारा यह स्पष्ट होता है कि सतत विकास योजना द्वारा बनाई गई ग्राम पंचायत में समितियों के प्रतिशत (स्थानीय समितियां 93:) (ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति 86%) (स्व सहायता समूह 100%) प्रतिशत है।

9. परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में रालामंडल ग्राम पंचायत में सतत विकास के अंतर्गत किए गए विभिन्न विकास कार्यों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से प्राप्त प्रमुख परिणाम निम्नलिखित हैं -

तालिका क्रमांक 1 - मूलभूत सुविधाओं में परिवर्तन

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ग्राम पंचायत द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षा सुविधाओं में सुधार, 86 प्रतिशत ने स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार तथा 80 प्रतिशत ने स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता में वृद्धि को स्वीकार किया।

तालिका क्रमांक 2 - निर्माण कार्यों में प्रगति

ग्राम पंचायत द्वारा सतत विकास के अंतर्गत आधारभूत संरचना विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सड़क निर्माण, 73 प्रतिशत ने नालियों के निर्माण, 93 प्रतिशत ने स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन तथा 86 प्रतिशत ने संपर्क मार्ग निर्माण में सुधार को स्वीकार किया।

तालिका क्रमांक 3 - कृषि क्षेत्र में परिवर्तन

सतत विकास कार्यक्रमों के कारण कृषि क्षेत्र में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिए। 63 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सिंचाई सुविधाओं में सुधार, 80 प्रतिशत ने उन्नत बीजों की उपलब्धता तथा 73 प्रतिशत ने उर्वरकों के बेहतर उपयोग की पुष्टि की।

तालिका क्रमांक 4 - समितियों की भूमिका

ग्राम पंचायत में सतत विकास कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्थानीय समितियों, 86 प्रतिशत ने ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति तथा 100 प्रतिशत ने स्व-सहायता समूहों की सक्रिय भूमिका को स्वीकार किया।

10. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रालामंडल ग्राम पंचायत ने सतत विकास के विभिन्न आयामों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पंचायत द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ जल, सड़क निर्माण, स्वच्छता, कृषि विकास एवं जनसहभागिता को बढ़ावा देने हेतु अनेक प्रभावी कार्य किए गए हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पंचायत स्तर पर गठित विभिन्न समितियाँ एवं स्व-सहायता समूह विकास कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ग्राम पंचायत द्वारा संचालित विकास कार्यों के कारण ग्रामीणों के जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन आया है तथा स्थानीय लोगों की विकास कार्यों में भागीदारी भी बढ़ी है।

सतत विकास के लक्ष्य तभी सफल हो सकते हैं जब स्थानीय शासन संस्थाएँ, जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण समुदाय मिलकर कार्य करें। रालामंडल पंचायत इस दिशा में एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

11. सुझाव

- ग्राम पंचायत स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों के संबंध में नियमित जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- जल संरक्षण एवं वर्षा जल संचयन कार्यक्रमों को और अधिक बढ़ावा दिया जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं एवं चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों एवं जैविक खेती को प्रोत्साहित किया जाए।
- स्व-सहायता समूहों को आर्थिक रूप से और अधिक सशक्त बनाया जाए।
- पंचायत स्तर पर पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण कार्यक्रमों को नियमित रूप से संचालित किया जाए।

© 2026 डॉ. शैलबाला गांधी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- विकास योजनाओं की निगरानी में स्थानीय नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

12. अध्ययन की उपयोगिता

- यह अध्ययन ग्राम पंचायतों की विकासात्मक भूमिका को समझने में सहायक है।
- सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में स्थानीय शासन की भूमिका स्पष्ट करता है।
- नीति-निर्माताओं एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री प्रदान करता है।
- ग्रामीण विकास योजनाओं के प्रभावों का मूल्यांकन करने में सहायक है।
- जनभागीदारी एवं स्थानीय स्वशासन को मजबूत बनाने में उपयोगी है।
- पंचायत प्रतिनिधियों को विकास कार्यों की प्राथमिकताएँ निर्धारित करने में सहायता प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह योगेन्द्र. ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज व्यवस्था. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन; 2019.
2. दुबे श्यामाचरण. भारतीय ग्राम एवं ग्रामीण विकास. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी; 2018.
3. भारत सरकार. सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट.
4. पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार. पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास रिपोर्ट.
5. मध्यप्रदेश शासन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग. वार्षिक रिपोर्ट.
6. शर्मा RK. ग्रामीण विकास में ग्राम पंचायत की भूमिका. शोध सरिता. 2022;9(2):55-62.
7. वर्मा M, चौधरी S. सतत विकास और स्थानीय स्वशासन. विद्यावार्ता. 2023;6(1):101-108.
8. ग्राम पंचायत रालामंडल. अभिलेख एवं विकास प्रतिवेदन.
9. क्षेत्रीय अवलोकन एवं साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त प्राथमिक आँकड़े.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. शैलबाला गांधी समाजशास्त्र की सहायक प्राध्यापक हैं। वे कस्तूरबा ग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत में अध्यापन एवं अकादमिक कार्य से जुड़ी हैं। उनका शैक्षणिक कार्य समाजशास्त्र के क्षेत्र में शिक्षण, शोध और सामाजिक विषयों के अध्ययन पर केंद्रित है।

© 2026 डॉ. शैलबाला गांधी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/